



दी नैक्सट पोस्ट

साप्ताहिक

7 3 गोरखपुर में दौड़ेंगी 95 AC बसें 5 विरोध प्रदर्शन 8 मिलेगी प्लेइंग-11 में जगह

UPHIN/2023/90814

वर्ष: 03, अंक: 50

पृष्ठ संख्या: 8

मूल्य: 1.00 रु.

सोमवार 08 जून, 2026



विश्व पर्यावरण दिवस के सुअवसर सीएम योगी लगाया पेड़

वृक्षाणां रोपण



राजनाथ सिंह लखनऊ में वृक्षारोपण किया

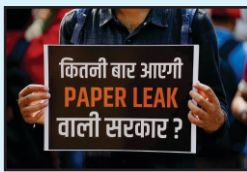


लखनऊ में विश्व पर्यावरण दिवस के सुअवसर पर रक्षा मंत्री, भारत सरकार एवं लखनऊ लोकसभा क्षेत्र से जनप्रिय सांसद राजनाथ सिंह जी की गरिमामयी उपस्थिति में वृक्षारोपण करते हुए। इस अवसर पर महापौर, लखनऊ श्रीमती सुषमा खर्कवाल जी, महानगर अध्यक्ष, भाजपा, लखनऊ श्री आनंद द्विवेदी जी, प्रधान निदेशक, रक्षा संपदा (मध्य कमान) लखनऊ श्रीमती भावना सिंह जी एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

अभिजीत दीपके की हुंकार



मुझे काफी देर तक एयरपोर्ट से बाहर नहीं निकलने दिया गया, जंतर-मंतर पर प्रदर्शन के दौरान बोले अभिजीत दीपके।



सांसद राजनाथ सिंह ने प्रतीक सादव को दी श्रद्धाजलि

योगी के टोंटी वाले तंज पर अखिलेश यादव का तीखा पलटवार, बोले- सीएम यानी करप्ट माउथ

सीएम योगी, अखिलेश यादव आमने-सामने

लखनऊ, संवाददाता। मुख्यमंत्री की टिप्पणी पर विपक्षी नेता ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए सामाजिक मंच पर कई सवाल उठाए। उन्होंने मुख्यमंत्री के अतीत, राजनीतिक सफर और उत्तराधिकार से जुड़े मुद्दों को लेकर निशाना साधा। बयानबाजी के इस दौर ने प्रदेश की राजनीति में नया विवाद खड़ा कर दिया है। अखिलेश यादव ने सीएम योगी के टोंटी वाले तंज पर पलटवार किया है। उन्होंने अपने एक्स अकाउंट से लिखा- विज्ञान कहता है कि किशोरावस्था में किया गया वनस्पति का अत्यधिक सेवन व्यक्ति के बोलने और समझने की क्षमता को प्रभावित करता है। वहीं, मनोविज्ञान कहता है कि बचपन और किशोरावस्था के अनुभव व्यक्ति की भाषा, व्यवहार और व्यक्तित्व पर गहरी छाप छोड़ते हैं। वही संस्कार आगे चलकर सार्वजनिक जीवन में भी झलकते हैं। सीएम के "करप्ट माउथ" होने की वजह शायद यही है। जिन्हें बड़ का इतिहास नहीं पता, उनके लिए यह दबाई गई जानकारी है।



खिलेश यादव ने इन मुद्दों पर कसा तंज

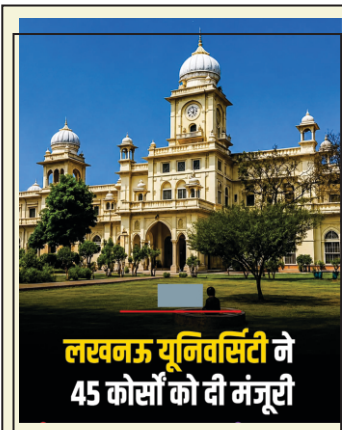
- मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, 1994 के आसपास अजय सिंह बिष्ट अपने पारिवारिक परिवहन व्यवसाय में सहयोग कर रहे थे।
- उस समय उनके पास तीन बसें और एक ट्रक था।
- संभवतः उन्होंने यह भाषिक अभद्रता उसी दौर में, डग्गामार वाहन चलवाते समय सीखी।
- अजय सिंह बिष्ट के पिता श्री आनंद सिंह बिष्ट और गोरखनाथ मठ के पूर्व महंत श्री अवैद्यनाथ जी यानी श्री कृपाल सिंह बिष्ट जी, रिश्ते में भाई बताए जाते हैं।
- कहा जाता है कि बाद में उनके चाचा ने ही उन्हें मठ में बुलाया।
- महंत श्री अवैद्यनाथ जी ने अपने भतीजे अजय सिंह बिष्ट को कुछ ही वर्षों में मठ का उत्तराधिकारी बना दिया।

सीएम योगी का दिया बयान

दरअसल, विश्व पर्यावरण दिवस 2026 के अवसर पर मंच से संबोधित करते हुए सीएम योगी आदित्यनाथ ने बिना किसी का नाम लिए सियासी चुटकी ली थी। सीएम योगी ने कहा था, हम हर घर नल जल योजना को आगे बढ़ा रहे हैं, कोई टोंटी चोरी कर ले रहा है। कोई टोंटी खुली छोड़ दे रहा है। जलस्रोतों को नुकसान पहुंचाने वाले भूमाफिया, वन माफिया, खनन माफिया व स्मगलरों के प्रति सजग रहें। कोई पानी बर्बाद कर रहा है, तो ऐसे लोगों को टोके। जल संरक्षण को जीवन का हिस्सा बनाएं। यह बयान देते हुए मुख्यमंत्री मंद-मंद मुस्कुराते भी नजर आए थे, जिसे वहां मौजूद लोगों और राजनीतिक विश्लेषकों ने तुरंत सपा प्रमुख अखिलेश यादव पर लगे पुराने टोंटी चोरी के आरोपों से जोड़कर देवना शुरू कर दिया।

अखिलेश यादव ने सवाल उठाया

उत्तराधिकारी के रूप में उन्हीं को क्यों चुना गया? क्या यह केवल योग्यता का निर्णय था या रिश्तेदारी का भी प्रभाव था? पहले मठ की गद्दी मिली, फिर कुछ ही वर्षों में लोकसभा की सीट भी। स्पष्ट किया जाए कि मठ में महंत चुनने के लिए क्या कोई औपचारिक चुनाव प्रक्रिया हुई थी? डग्गामार वाहन चलवाने वाला व्यक्ति क्या 4 वर्षों में ही इतना योग्य हो गया? यदि नहीं, तो क्या इसे 'पक्षपाती परिवारवाद' नहीं कहा जाना चाहिए? और अंत में- पद और परिधान रिश्तों और समय की मदद से मिल सकते हैं, पर भाषा और व्यवहार नहीं।



लखनऊ यूनिवर्सिटी ने 45 कोर्सों को दी मंजूरी



ऑयल इंडिया को अंडमान में मिला दूसरा गैस भंडार



युवा खिलाड़ी वैभव सूर्यवंशी T-20 टीम में शामिल हुए



जान बचाने पर मिला ₹1000

तालाब में डूब रही लड़की को बचाने वाले सिपाही को कमिश्नर ने दिया इनाम



मुख्य मंत्री जी का स्वागत कर माँ दुर्गा की प्रतिमा भेंट की। 516 करोड़ की 262 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण। देवीपाटन के लिए ऐतिहासिक दिन



सम्पादकीय

ट्रंप का ‘जबरन मजदूरी’ टैरिफ

अब अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप ‘जबरन मजदूरी’ के वैश्विक पैरोकार बनना चाहते हैं। उनके निशाने पर भारत समेत 54 देश ऐसे हैं, जो बंधुआ अथवा जबरन मजदूरी से बनाए गए सामान के आयात रोकने में नाकाम रहे हैं। अमरीकी व्यापार प्रतिनिधि कार्यालय ने व्यापार कानून की धारा 301 के तहत एक प्रस्ताव दिया है कि इन देशों पर 12.5 फीसदी टैरिफ लगाया जाए। वैसे अमरीकी सर्वोच्च अदालत ‘ट्रंपवादी टैरिफ’ को ‘अवैध’ करार दे चुकी है, फिर भी राष्ट्रपति को अधिकार प्राप्त हैं कि वह एक निश्चित अवधि तक 10 फीसदी टैरिफ लगा सकते हैं। राष्ट्रपति ट्रंप ने इसी संवैधानिक प्रावधान का इस्तेमाल करते हुए जो वैश्विक टैरिफ लगाया था, उसकी अवधि 24 जुलाई को समाप्त हो रही है। दरअसल ट्रंप बुनियादी तौर पर ‘व्यापारी’ हैं और राष्ट्रपति कार्यालय भी उसी मानस के साथ धकेलना चाहते हैं। यदि भारत, चीन, जापान, ब्राजील, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, सऊदी अरब आदि देशों में ‘जबरन मजदूरी’ प्रचलित है, तो अमरीकी राष्ट्रपति के पेट में दर्द क्यों हो रहा है? क्या ट्रंप को यह ठेकेदारी भी मिली है? भारत का ही उदाहरण लें, तो वहां अनुमान है कि 1 करोड़ 10 लाख 50,000 से अधिक ‘जबरन श्रम’ से पीड़ित, विवश लोग हैं। वे बाल-मजदूर, बंधुआ अथवा गुलाम मजदूर भी हो सकते हैं। देश के ईंट-भट्टों, कृषि, कपास, वस्त्र उद्योग, खनन, झोंगा प्रसंस्करण, घरेलू काम, कालीन बुनाई, पत्थर की खदानों आदि में ‘जबरन मजदूरी’ का चलन है। हालांकि भारत में बंधुआ मजदूरी प्रणाली (उन्मूलन) अधिनियम की व्यवस्था भी है, लेकिन उन स्थितियों से अमरीका पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? यह अमरीका की समस्या नहीं है, लेकिन टैरिफ के लिए ट्रंप कुछ भी कर सकते हैं और कोई भी दलील दे सकते हैं।

अमरीकी राष्ट्रपति ने नए टैरिफवाद के लिए एक और क्षेत्र चन लिया है। बंधुआ-बाल मजदूरी या पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुलामी के संदर्भ में अमरीका ने कौन से ठोस और कारगर प्रयास किए हैं? दरअसल इस ‘जबरन मजदूरी’ टैरिफ का प्रस्ताव ऐसे समय सामने आया है, जब भारत में अमरीकी प्रतिनिधिमंडल के साथ ‘द्विपक्षीय व्यापार समझौते’ की 99 फीसदी रूपरेखा तय की जा चुकी है। यह पुष्टि केंद्रीय उद्योग-वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने भी की है। अंतिम 1 फीसदी बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत को लगता है कि ‘जबरन श्रम’ टैरिफ के जरिए अमरीका अनधिकार चेष्टा कर रहा है। दरअसल राष्ट्रपति ट्रंप ईरान युद्ध के घाटे और नुकसान की भरपाई अब एक और टैरिफ के माध्यम से करना चाहते हैं। उस थोपे हुए, फिजूल, नाकाम युद्ध पर अमरीका के 100 अरब डॉलर फूंकें जा चुके हैं। बेशक यह सच है कि राष्ट्रपति ट्रंप ने ‘जैसे को तैसा टैरिफ’ के जरिए 214 अरब डॉलर कमाए थे, लेकिन अदालती आदेश के बाद अमरीका को 165 अरब डॉलर वापस रिफंड करने पड़े। इसके बावजूद राष्ट्रपति ट्रंप विचलित नहीं हुए। उन्हें ‘जबरन टैरिफ’ से इतना लगाव है कि उन्होंने दर्जनों व्यापारिक साझेदार देशों पर टैरिफ थोपने का प्रस्ताव तैयार कराया है। दूसरी ओर कनाडा, पाकिस्तान, मैक्सिको, इंडोनेशिया आदि कुछ देश ऐसे बताए गए हैं कि जो ‘जबरन श्रम’ वाले सामान को आयात नहीं करते अथवा बहुत कम करते हैं। उन पर अमरीका 10 फीसदी टैरिफ लगाएगा। वह किसी को छोड़ने वाला नहीं है, क्योंकि उन्हें अमरीका की अर्थव्यवस्था को संतुलित करना है। अमरीकी कानून का दोगलापन देखिए कि ‘जबरन श्रम’ के संदर्भ में उसने दुर्लभ खनिज, कुछ और धातुओं, कॉफी, फार्मा, विमान के कुछ हिस्से आदि के क्षेत्रों को छूट दे रखी है। कोबाल्ट की खदानों में जो शोषण जारी रहा है, यदि अमरीका को अनुकूल लगता है या उससे फायदा होता है, तो उस शोषण का भी स्वागत है। वाह! सुपरपॉवर अमरीका!! बहरहाल अभी तो प्रस्ताव रखा गया है। अभी भारत समेत 54 देशों पर लागू किया जाना शेष है। सुनवाई का समय 22 जून तय किया गया है, लेकिन अमरीका और राष्ट्रपति ट्रंप के मंसूबे साफ हैं। यह अमरीका की धमकी भी हो सकती है, ताकि भारत से व्यापार समझौते में कुछ और रियायतें हासिल की जा सकें। भारत को ‘अमरीकी ब्लैकमेल’ के सामने झुकना नहीं चाहिए और प्रस्तावित टैरिफ का सख्ती से जवाब देना चाहिए। ट्रंप को समझना मुश्किल है। वह कभी टैरिफ लगा देते हैं, कभी इसकी वापसी कर देते हैं। वह एक ओर भारत को अपना मित्र बताते हैं, तो दूसरी ओर नए-नए टैरिफ लगाने की धमकी देने लगते हैं। अमरीकी सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बावजूद वह अपना तानाशाही रवैया नहीं छोड़ रहे हैं।

विकास और प्रकृति के बीच संतुलन जरूरी

विश्व पर्यावरण दिवस केवल औपचारिक कार्यक्रमों और नारों का अवसर नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ हमारे संबंधों का आत्ममंथन करने का दिन है। ऐसे समय में जब पूरी दुनिया जलवायु संकट, ग्लेशियरों के पिघलने और जैव विविधता के क्षरण को लेकर चिंतित है, तब हिमालय की गोद में बसे हिमाचल प्रदेश से उठती चेतावनियों को गंभीरता से सुनना आवश्यक हो गया है। कुल्लू-मनाली से रोहतांग और पार्वती घाटी तक फैली हिमालयी वादियां, जो कभी शांति, अध्यात्म और प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक थीं, आज अनियंत्रित पर्यटन, अवैज्ञानिक विकास और उपभोक्तावादी जीवनशैली के दबाव में कराहती दिखाई दे रही हैं। हिमालय केवल पहाड़ों का समूह नहीं है। यह उत्तर भारत की जल-सुरक्षा, जलवायु संतुलन, जैव विविधता और सांस्कृतिक चेतना का आधार है। इसकी नदियां करोड़ों लोगों के जीवन को पोषित करती हैं और इसकी पारिस्थितिकी पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के पर्यावरणीय संतुलन को प्रभावित करती है। इसलिए हिमालय को मनोरंजन स्थल नहीं, बल्कि प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक धरोहर के रूप में देखने की आवश्यकता है। हाल के वर्षों में हिमाचल प्रदेश ने प्राकृतिक आपदाओं की भयावह श्रृंखला देखी है। बादल फटना, भूस्खलन, अचानक आई बाढ़, सडकों का धंसना और ग्लेशियरों का सिकुड़ना अब अपवाद नहीं रहे। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार ब्यास बेसिन में संभावित रूप से खतरनाक हिमनद झीलों की संख्या वर्ष 2013 के 67 से बढ़कर 2015 में 89 हो गई। यह वृद्धि ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड जैसी विनाशकारी आपदाओं के बढ़ते खतरे की स्पष्ट चेतावनी है। इसी प्रकार पार्वती घाटी के ग्लेशियरों में तेजी से हो रहा क्षरण भी गंभीर चिंता का विषय है। विशेषज्ञों के अनुसार पार्वती ग्लेशियर निरंतर पीछे खिसक रहा है। ग्लेशियरों का पिघलना केवल बर्फ का घटना नहीं, बल्कि हिमालय की जीवन-धारा का कमजोर पड़ना है। इसका सीधा प्रभाव भविष्य में ब्यास नदी तंत्र, कृषि, पेयजल और स्थानीय जीवन पर पड़ सकता है। यदि हिमालय की हिम-सम्पदा क्षीण हुई, तो इसका असर केवल पहाड़ों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरा उत्तर भारत जल-संकट और पर्यावरणीय असंतुलन का सामना करेगा। इन संकटों के पीछे केवल वैश्विक जलवायु परिवर्तन जिम्मेदार नहीं है। अनियोजित निर्माण, पहाड़ों की अंधाधुंध कटाई, नदी किनारों पर अतिक्रमण, कंक्रीटीकरण और अत्यधिक मनोरंजन-प्रधान पर्यटन भी उतने ही उत्तरदायी हैं। दुखद विडंबना यह है कि हिमालय आने वाला एक बड़ा वर्ग अब प्राकृतिक शांति से अधिक कृत्रिम मनोरंजन की तलाश में दिखाई देता है। बड़े-बड़े रिसॉर्ट, तेज संगीत, भारी ट्रैफिक और ऊर्जा खपत आधारित पर्यटन मॉडल पहाड़ों की वहन क्षमता पर लगातार दबाव बढ़ा रहे हैं। सबसे गंभीर प्रश्न यही है कि क्या हिमाचल आने वाला पर्यटक वही कृत्रिम सुविधाएं चाहता है, जो किसी भी महानगर में उपलब्ध हैं? यदि ऐसा है, तो फिर हिमालय की विशिष्टता कहां बचती है?

अब असली-नकली तृणमूल

ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस में बगावत हो गई है, लिहाजा पार्टी में टूट के पुख्ता आसार हैं। ममता ने जहां ‘प्रतीकात्मक धरना’ दिया था, वहां तृणमूल के 80 नवनिर्वाचित विधायकों में से सिर्फ 7 ही पहुंचे। शेष 73 विधायक कहां थे? धरने से एक दिन पहले ममता बनर्जी ने विधायकों की बैठक बुलाई थी, लेकिन उसमें भी 20 विधायक ही पहुंचे। शेष 60 विधायक तब भी गायब थे, नतीजतन बैठक रद्द करनी पड़ी।

धरने के वक्त समर्थकों की जो संख्या दिख रही थी, उससे ममता और तृणमूल के प्रति मोहभंग और अस्वीकार्यता स्पष्ट होती है। संसद के दोनों सदनों में तृणमूल कांग्रेस के 42 सांसद हैं, 80 विधायक हालिया चुनाव में जीत कर आए हैं और करारी पराजय के बावजूद 40 फीसदी से अधिक वोट तृणमूल को मिले हैं। इसके मद्देनजर पार्टी के अस्तित्व और समग्र स्वीकृति सरीखे सवाल नहीं उठाए जा सकते। सवाल यह मौजू है कि क्या तृणमूल कांग्रेस की नियति भी शिवसेना और एनसीपी जैसी हो सकती है? आज ‘असली शिवसेना’ महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के पास है। जिस एनसीपी को शरद पवार ने गठित किया था, सालों तक सींचा भी था, आज वह पार्टी उन्हीं की घरेलू बहू सुनेत्रा पवार (दिवंगत अजित पवार की पत्नी) के कब्जे में है। अजित शरद पवार के सगे भतीजे थे और वह ही अजित की राजनीति के ‘चाणक्य’ थे। अजित ने भाजपा से गठबंधन कर लिया और ‘महायुति’ की सरकार में उपमुख्यमंत्री बन गए। एक विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई। अब उनकी पत्नी सरकार में उपमुख्यमंत्री हैं और एनसीपी की प्रमुख भी हैं। हालांकि दोनों मामले शीर्ष अदालत के विचाराधीन हैं। ममता बनर्जी ने दो बागी विधायकों-ऋतब्रत बनर्जी और संदीपन साहा-को पार्टी से निष्कासित कर दिया है। उसके बाद पार्टी के भीतर विद्रोह और असंतोष गहरा गए हैं। चुनाव तक तृणमूल के राष्ट्रीय प्रवक्ता रहे रिजु दत्ता यहां तक दावा कर रहे हैं कि 80 में से 50 से अधिक विधायक टूटने नहीं, बल्कि पार्टी पर आधिपत्य और असलीपन का दावा ठोंकने पर आमादा हैं। ऐसे नेताओं की शिकायत है कि अब पार्टी में कोई भी नेतृत्व नहीं रहा। आई-पैक कंपनी पार्टी को धकिया रही है। ये नाराज विधायक स्पीकर (विधानसभा अध्यक्ष) से मिल कर साबित कर सकते हैं कि 65-70 फीसदी विधायक एकजुट हैं और ममता से अलग हैं, लिहाजा वे ही ‘असली तृणमूल’ हैं। उन्हें ऐसी मान्यता दी जाए।

सत्ता के बिना तिनका-तिनका हुई टीएमसी

इस व्यवस्था में एक पूरा नैकसिस बन जाता है। वह नैकसिस सत्ता के बल पर आम जनता में अपना आतंकवाद जमाता है, उसी के बल पर संगठन या गिरोह को जिताता है और उसके बाद अपनी हिस्सेदारी मांगता है। बंगाल में ममता बैनर्जी के राज में लगभग यही व्यवस्था स्थापित हो गई थी। लेकिन जैसे ही सत्ता हाथ से फिसली, वैसे ही चन्द दिनों में ही ममता बैनर्जी की राजनीतिक मशीन के कल पुर्जे गलियों में और सडकों पर बिखरने लगे। यह स्वाभाविक ही था। संघर्ष करने की ऊर्जा विचार से आती है, सत्ता से नहीं। जिस दल की कोई विचारधारा नहीं होती, जिसका लक्ष्य केवल सत्ता हथियाना होता है, उस दल में टूट फूट स्वाभाविक मानी जाती है। ममता बैनर्जी ने तानाशाही तरीके से शासन किया। भ्रष्टाचार के कई आरोप भी इस दल के नेताओं पर लगे। यह भी उल्लेखनीय है कि ममता बैनर्जी ने पश्चिम बंगाल में केंद्र की योजनाओं को लागू ही नहीं किया। इससे बड़ी संख्या में जनता कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाने से वंचित हो गई। इंडिया गठबन्धन में ममता बैनर्जी को सबसे ताकतवर माना जाता था। वे अपने दम पर पिछले पन्द्रह साल से सत्ता पर काबिज थीं। उन्होंने बंगाल की शक्तिशाली पार्टी सीपीएम, जो लगातार पैंतीस साल से बंगाल पर एक छत्र राज कर रही थी, को पराजित किया था। कांग्रेस को बंगाल में धूल चटा दी थी। लेकिन 2026 के विधानसभा चुनाव में वे हार गईं। लेकिन हार का अर्थ यह नहीं कि सीपीएम और कांग्रेस की तरह वह शून्य पर सिमट गईं। विधानसभा में तृणमूल कांग्रेस को अरस्सी सीटें प्राप्त हुईं। अभी भी संसद में उसके पास चालीस के आसपास सांसद हैं। लेकिन उसके पास इस बार केवल एक चीज छिन्न गई। ममता बैनर्जी इतने विधायक नहीं जिता पाई कि वे चौथी बार मुख्यमंत्री बन सकें। यह भी कोई अनोखी बात नहीं है। राजनीति में हार-जीत लगी रहती है। इसलिए राजनीति में इसे सामान्य घटना ही माना जाता है। आखिर कांग्रेस ही कितने साल से लगातार हार रही है। चार प्रदेशों को छोड़ कर वह किसी भी प्रदेश में सत्ता में नहीं है। केरल में दस साल बाद सीपीएम सत्ता से बाहर हो गई है। लेकिन पार्टी सामान्य तरीके से काम-काज कर रही है। पर तृणमूल कांग्रेस के मामले में बिल्कुल उलटा हो रहा है। सत्ता की डोर टूटते ही मानो भूकम्प आ गया हो। तृणमूल की कायनात हिल गई हो। जगह जगह नगरपालिकाओं से, पंचायतों से, नगर निगमों से तृणमूल के सदस्य ममता को अपने इस्तीफे भेज रहे हैं। यहां तक कि कोलकाता नगर निगम के महापौर हकीम साहिब ने भी ममता से क्षमा मांग कर महापौर के पद से इस्तीफा दे दिया है, जबकि निगम में तृणमूल का बहुमत अभी भी है।

तृणमूल के जिन नेताओं ने सरकारी स्कीमों का लाभ देने के लिए लाभार्थियों से कट मनी (रिश्वत) ली थी, वे लाउडस्पीकर लगा कर सार्वजनिक रूप से वह वापस कर रहे हैं। जिन भवनों पर तृणमूल के लोगों ने वर्षों से बलपूर्वक कब्जा कर रखा था, वे स्वयं खाली कर रहे हैं। कोलकाता में पार्टी के एक प्रवक्ता ने, जो मीडिया में गाली गलौज की भाषा में धमकाता रहता था, उसने यह कहते हुए क्षमा मांग ली कि यह उसे पार्टी के आदेश पर करना पड़ रहा था। ममता बैनर्जी को शायद इतने पर भी इस बात का अंदाजा नहीं हो पाया कि बंगाल की आम जनता उनके कितनी खिलाफ है। दो दिन पहले उसने ऐलान कर दिया कि वे विशाल विरोध प्रदर्शन करेंगी, जैसा कि वे मुख्यमंत्री रहते हुए प्रायः करती रहती थीं। लेकिन उनके इस विरोध प्रदर्शन में जनता तो क्या, पार्टी के सांसद व विधायक भी नहीं पहुंचे। मीडिया और सुरक्षा बलों के लोग ज्यादा थे, आम जनता कम थी।

पृथ्वी संकट में-क्या हम समय रहते चेतेंगे

विश्व पर्यावरण दिवस 2026 का मुख्य विषय ‘प्रकृति से प्रेरित, जलवायु के लिए, हमारे भविष्य के लिए’ रखा गया है। यह विषय इस बात पर बल देता है कि जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौती का समाधान प्रकृति के साथ संतुलित संबंध स्थापित करके ही संभव है। आज जब पृथ्वी बढ़ते तापमान, प्रदूषण, जैव-विविधता के क्षरण और प्राकृतिक आपदाओं से जूझ रही है, तब यह विषय पूरी मानवता को चेतावनी भी देता है और समाधान की दिशा भी दिखाता है। विश्व पर्यावरण दिवस प्रत्येक वर्ष 5 जून को मनाया जाता है। यह दिवस केवल पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव सभ्यता को उसके भविष्य के प्रति सचेत करने का अवसर भी है। आज पूरी दुनिया जिस पर्यावरणीय संकट का सामना कर रही है, वह किसी एक देश, क्षेत्र या समुदाय की समस्या नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न बन चुका है। आधुनिक विकास की अंधी दौड़ में मनुष्य ने प्रकृति का इतना अधिक दोहन किया है कि पृथ्वी का प्राकृतिक संतुलन लगातार बिगड़ता जा रहा है। बढ़ता तापमान, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़, भूस्खलन, समुद्री तूफान, वनाग्नि और जैव विविधता का क्षरण इस बात के संकेत हैं कि प्रकृति अब अपने धैर्य की सीमा पर पहुंच चुकी है। यदि समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो आने वाले दशकों में पृथ्वी पर जीवन के लिए परिस्थितियां और अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं। पिछले लगभग पांच दशकों में पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक अंतरराष्ट्रीय प्रयास किए गए हैं। वर्ष 1972 में स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में आयोजित मानव पर्यावरण सम्मेलन को वैश्विक पर्यावरण आंदोलन की शुरुआत माना जाता है। इसके बाद 1992 में ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में पृथ्वी शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें सतत विकास की अवधारणा को वैश्विक मान्यता मिली। वर्ष 1997 का क्योटो प्रोटोकॉल और 2015 का पेरिस जलवायु समझौता भी पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास रहे।

शीशम से लटका था शव

पेड़ से बेल्ट के सहारे लटक रही थी युवक की मौत, हत्या या सुसाइड? उलझी पुलिस

गोरखपुर,संवाददाता। युवक की मौत हत्या है या आत्महत्या, इसे लेकर इलाके में तरह-तरह की चर्चाएं हैं। अचानक हुई इस घटना से परिजनों में कोहराम मचा है। हाटा पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारणों का पता चल सकेगा। हाटा कोतवाली क्षेत्र के चौहान वार्ड नंबर-10 अंबेडकर नगर में एक युवक का शव शीशम के पेड़ से बेल्ट के सहारे लटका मिला। मृतक कर्नाटक में टाइल्स लगाने का काम करता था। युवक की संदिग्ध मौत से इलाके में सनसनी फैल गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक, सोमवार को स्थानीय लोगों ने अंबेडकर नगर में शीशम के पेड़ से युवक का शव लटका देखा। सूचना मिलते ही हाटा कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और शव को नीचे उतरवाया। मृतक की पहचान शिवम चौहान (20) पुत्र सीताराम चौहान, वार्ड-10 निवासी के रूप में हुई है।

टावर पर चढ़ा युवक

हाई वोल्टेज ड्रामा-पत्नी के मुंबई जाने से नाराज पति चढ़ा मोबाइल टावर पर, समझाने में जुटी पुलिस

गोरखपुर, संवाददाता। मेंहदावल कस्बे के सीएचसी तिराहा स्थित मोबाइल टॉवर पर एक युवक चढ़ गया। बताया जा रहा है कि युवक अपनी पत्नी के मुंबई चले जाने से नाराज था। गुस्से में उसने यह खतरनाक कदम उठा लिया। घटना की सूचना मिलते ही मेंहदावल पुलिस मौके पर पहुंच गई। पुलिसकर्मी युवक को समझा-बुझाकर नीचे उतारने की कोशिश में जुटे हैं। मेंहदावल कस्बे में उस समय हड़कंप मच गया जब एक युवक पत्नी के मुंबई चले जाने से नाराज होकर सीएचसी तिराहा स्थित मोबाइल टॉवर पर चढ़ गया। सूचना पर पहुंची पुलिस युवक को सुरक्षित नीचे उतारने का प्रयास कर रही है। दरअसल, मेंहदावल कस्बे के सीएचसी तिराहा स्थित मोबाइल टॉवर पर एक युवक चढ़ गया। बताया जा रहा है कि युवक अपनी पत्नी के मुंबई चले जाने से नाराज था। गुस्से में उसने यह खतरनाक कदम उठा लिया। घटना की सूचना मिलते ही मेंहदावल पुलिस मौके पर पहुंच गई। पुलिसकर्मी युवक को समझा-बुझाकर नीचे उतारने की कोशिश में जुटे हैं। फायर ब्रिगेड को भी सूचित कर दिया गया है। मोबाइल टॉवर पर युवक के चढ़ने की खबर फैलते ही मौके पर लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई। लोग युवक को नीचे उतारने की अपील करते रहे। घंटों से हाई वोल्टेज ड्रामा जारी है। पुलिस ने युवक के परिजनों को भी मौके पर बुलाया है ताकि बातचीत कर उसे सुरक्षित नीचे उतारा जा सके।

गोरखपुर में करोड़ों पौधे लगाने के बाद भी घट रही हरियाली, संरक्षण पर उठे सवाल

संवाददाता, गोरखपुर। हरियाली बढ़ाने के उद्देश्य से प्रदेश सरकार की ओर से हर वर्ष बड़े स्तर पर पौधारोपण अभियान चलाया जा रहा है। इस पर लाखों रुपये खर्च किए जा रहे हैं, लेकिन गोरखपुर में इसका अपेक्षित परिणाम दिखाई नहीं दे रहा। वन विभाग के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2018 के बाद जिले का वन आवरण क्षेत्र 240 हेक्टेयर कम हो गया है। यह स्थिति तब है, जब पिछले पांच वर्षों में 27 विभागों ने मिलकर दो करोड़ 54 लाख तीन हजार 307 पौधे लगाने का दावा किया है। लेकिन, पौधों के संरक्षण और नियमित देखभाल में कमी से ये पौधे वृक्ष नहीं बन पा रहे हैं। जबकि पौधारोपण अभियान में शामिल होने वाले विभाग विकास परियोजनाओं के लिए बड़े पैमाने पर वृक्षों की कटान हरियाली घटने का प्रमुख कारण मान रहे हैं। फिर भी नियमों के तहत एक वृक्ष की कटान के बदले 10 पौधे लगाने का प्रावधान है, लेकिन सड़कों के चौड़ीकरण और अन्य निर्माण कार्यों में कटे वृक्षों की भरपाई धरातल पर नजर नहीं आ रही है। प्रदेश के साथ गोरखपुर

में भी पिछले कुछ वर्षों में विकास कार्यों की रफ्तार तेज हुई है। कई प्रमुख मार्ग दो लेन से चार और छह लेन में परिवर्तित किए जा चुके हैं। इन परियोजनाओं के दौरान सड़क किनारे हजारों पेड़ काटे गए। विभागीय आंकड़ों के अनुसार अब तक 25 हजार से अधिक वृक्षों की कटान हो चुकी है। इसके विपरीत जिन सड़कों का चौड़ीकरण और निर्माण पूरा हो चुका है, वहां आज भी बड़े और छायादार वृक्षों की कमी साफ दिखाई देती है। भीषण गर्मी में राहगीरों को कई किलोमीटर तक बिना छाया के सफर करना पड़ रहा है। इसे देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर हर वर्ष व्यापक पौधारोपण अभियान चलाया जाता है। अभियान के तहत खाली भूमि, फोरलेन मार्गों, सड़क किनारों और विभागीय परिसरों में पौधे लगाए जाते हैं। लेकिन, पौधारोपण के बाद उनकी निगरानी और संरक्षण पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जाता। नतीजतन बड़ी संख्या में पौधे सूख जाते हैं और अगले वर्ष उन्हीं स्थानों पर फिर नए पौधे रोप दिए जाते हैं। पिछले

पांच वर्षों के आंकड़ों के अनुसार वन विभाग ने अपने भू-भाग और जंगलों के रिक्त स्थलों पर 90 लाख 47 हजार 523 पौधे लगाए। वहीं अन्य 26 विभागों ने एक करोड़ 63 लाख 55 हजार 784 पौधे शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क किनारे तथा विभागीय भूमि पर रोपे। इसके बावजूद जिले में हरियाली बढ़ने के बजाय घटती जा रही है। हालांकि वन विभाग का दावा है कि वह अपने क्षेत्रों में सूखने वाले पौधों के स्थान पर नए पौधे लगाकर उनकी संख्या बनाए रखने का प्रयास करता है। लेकिन अन्य विभाग पौधारोपण के बाद उनका संरक्षण नहीं करते, जिससे अब तक लगाए गए पौधों में करीब 80 प्रतिशत पौधे नष्ट हो चुके हैं। वन विभाग के विशेषज्ञ बताते हैं कि एक पौधे को छायादार वृक्ष बनने में लगभग सात वर्ष लगते हैं, लेकिन वर्ष 2017 से लगातार चल रहे पौधारोपण अभियानों के बावजूद सड़क किनारों पर अपेक्षित संख्या में विकसित वृक्ष आज भी दिखाई नहीं दे रहे हैं। इससे पौधारोपण अभियानों की प्रभावशीलता और निगरानी व्यवस्था पर सवाल उठने लगे हैं।

कूड़ा उठाकर श्रमदान करते सांसद रवि किशन



गोरखपुर,संवाददाता। केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के सफल 12 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर गोरखपुर के सांसद एवं अभिनेता रवि किशन ने मंगलवार को श्रमदान एवं प्लॉग रन अभियान में हिस्सा लिया। नौका विहार क्षेत्र में महापौर और पार्षदों के साथ मिलकर उन्होंने प्लास्टिक कचरा एकत्र किया और स्वच्छ भारत का संदेश दिया। गोरखपुर महानगर के नौका विहार क्षेत्र में स्वच्छता अभियान चलाया गया। सांसद रवि किशन के साथ महानगर जिलाध्यक्ष रमेश प्रताप गुप्ता, महापौर डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव तथा नगर निगम के पार्षदों ने श्रमदान किया। सांसद रवि किशन ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में स्वच्छता जनआंदोलन का रूप ले चुकी है। स्वच्छ भारत मिशन से लोगों में

सकारात्मक सोच विकसित हुई है। उन्होंने कहा कि स्वच्छ वातावरण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है। रवि किशन ने कहा कि समस्त गोरखपुर और नौका विहार को प्लास्टिक मुक्त एवं प्रदूषण मुक्त बनाना केवल अभियान नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करने का संकल्प है। यदि हर नागरिक आसपास स्वच्छता का संकल्प ले तो शहर और देश दोनों सुंदर बन सकते हैं। अभियान में बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिकों, भाजपा कार्यकर्ताओं और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। सभी जनप्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं ने स्वच्छता बनाए रखने तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए निरंतर कार्य करने का संकल्प लिया।

पूर्वोत्तर रेलवे में 2467 पदों पर भर्ती के लिए बोर्ड को भेजा गया है मांग पत्र

2025 में 2467 पदों पर भर्ती का मांग पत्र भेजा। 451 पदों का पैनल प्राप्त, 105 लोको पायलट पद। महाप्रबंधक ने डिजिटलीकरण, भर्ती उपलब्धियां गिनाईं।

संवाददाता, गोरखपुर। पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक उदय बोरवणकर ने बताया कि कार्यरत कुल कर्मचारियों की संख्या 45530 है। रेलवे भर्ती बोर्ड को वर्ष 2025 में 2467 पदों की भर्ती के लिए मांग पत्र भेजा जा चुका है, जिसमें से 451 पदों का पैनल पूर्व में प्राप्त हो चुका है। वर्ष 2026 में सहायक लोको पायलट के 105 पदों का इंडेंट प्राप्त हुआ है। वर्ष 2026 में कुल 89 नए पदों के लिए मांग पत्र भेजा गया है। पिछले तीन वर्षों में 487 पद ड्राइवरों के एवं 233 पद गार्ड के बढ़ाए गए हैं। विभिन्न विभागों में री-इंगेजमेंट के माध्यम से कुल 777 पदों को भरने का प्रस्ताव भी मंडलों को भेजा गया है। अनुकम्पा मामले में पिछले वर्ष 186 एवं इस वर्ष मई तक 56 मामलों में नियुक्ति प्रदान की गई है। महाप्रबंधक बुधवार को चौतन्त्र सभागार में एनई रेलवे मेंस कांग्रेस के साथ स्थाई वार्ता तंत्र (पीएनएम) की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि नई ट्रेनें चलाई जा रही हैं, दोहरीकरण, तीसरी लाइन आदि का कार्य चल रहा है। ऐसे में मैनपावर की जरूरत है, इन चुनौतियों के बावजूद हम रेलकर्मियों का अधिकतम उपयोग कर रहे हैं, जिसके लिए सभी रेलकर्मियों प्रशंसा के पात्र हैं। महाप्रबंधक ने बताया कि पिछले पांच से छह वर्षों में कार्मिक विभाग द्वारा सबसे अधिक डिजिटलाइजेशन किया गया है। ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट सिस्टम (एचआरएमएस) के माध्यम से कुल 29 माड्यूल लांच किए गए हैं, जिससे कर्मचारियों

को काफी सहूलियतें प्राप्त हुई हैं। रेलवे में कुल कार्यरत 576 श्रेणियां हैं, जिसमें संरक्षा श्रेणी को प्राथमिकता दी जा रही है। सभी प्रकार के चयन सीबीटी/डीबीटी के माध्यम से कराए जा रहे हैं। मिनिस्ट्रीयल, तकनीशियन, यातायात एवं वाणिज्य संवर्ग की कुल 26 कैटेगरी के अन्तर्गत 1666 रिक्तियों के अन्तर्गत परीक्षा करायी जा चुकी है, जिसमें 5800 कर्मी चयन में शामिल हुए व 1211 अभ्यर्थी सफल हुए हैं। मुख्यालय में चयन के कुल 436 कैटेगरी में से 418 कैटेगरी का चयन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुका है। एनई रेलवे मेंस कांग्रेस के अध्यक्ष सुभाष दूबे ने कहा कि रेल प्रशासन ने बहुत कुछ दिया है, आगे भी रेलवे व कर्मचारियों के हित में मांगों को पूरा किया जाय। अस्पतालों में सफाई व रेफरल के मामलों में सुधार कराया जाए। ट्रेकमैंटेनरों की समस्याओं को दूर करने व उनकी सुविधाओं पर ध्यान दिया जाना चाहिये। उन्होंने मुख्यालय में अच्छे कैंटीन, सामुदायिक केंद्र में एसी लगाने, कमरे बनाए जाने, सीनियर इंस्टीट्यूट में सुधार, महिला ट्रेकमैंटेनरों की सुविधायें बढ़ाने, लेखा विभाग के सामने स्टैंड बनाने आदि की मांग की। बैठक में अपर महाप्रबंधक विनोद कुमार शुक्ल, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी मनोज कुमार, प्रमुख विभागाध्यक्ष व एनई रेलवे मेंस कांग्रेस के महामंत्री अखिलेश कुमार पाण्डेय, कोषाध्यक्ष दुर्गेश पाण्डेय और संयुक्त मंत्री अभिषेक चतुर्वेदी आदि पदाधिकारी उपस्थित थे।

गोरखपुर में दौड़ेंगी 95 AC बसें

नगर निगम देगा निशुल्क जमीन, इलेक्ट्रिक बसों को कैबिनेट की मंजूरी

गोरखपुर,संवाददाता। गोरक्षनगरी की सड़कों पर जल्द ही 95 और इलेक्ट्रिक सिटी एसी बसें चलेंगी। ग्रास क्रॉस कांट्रैक्ट मॉडल के तहत इन बसों को चलाने की मंजूरी प्रदेश कैबिनेट ने दे दी है। इन बसों के संचालन का जिम्मा निजी ऑपरेटर संचालकों के पास होगा। वे ही बसों में लिए चार्जिंग परिचालक उपलब्ध कराएंगे। बसों के लिए चार्जिंग प्वाइंट भी ऑपरेटर बनाएंगे और नगर निगम निशुल्क जमीन उपलब्ध कराएगी। प्रस्ताव के मुताबिक, बसों की खरीद की जिम्मेदारी भी ऑपरेटरों की होगी, लेकिन सरकार उनकी खरीद पर सब्सिडी देगी। आठ मीटर लंबाई की बसों की

खरीद पर 40 लाख रुपये और 12 मीटर लंबाई की बसों पर 35 लाख रुपये तक की सब्सिडी दी जाएगी। नौ मीटर की बसों में लगभग 40 यात्रियों के बैठने की क्षमता होगी और इनका आकार अपेक्षाकृत छोटा होने से इन्हें शहर की व्यस्त और संकरी सड़कों पर आसानी से संचालित किया जा सकेगा। वहीं 12 मीटर लंबी बसों में 52 सीटें होंगी तथा यात्रियों को अधिक आरामदायक सफर का अनुभव मिलेगा। बसों के संचालन का अनुबंध 12 वर्षों के लिए किया



जाएगा। शहर में चार्जिंग प्वाइंट के लिए नगर निगम ने कोनी में जमीन उपलब्ध कराने की तैयारी की है। जबकि, एक और चार्जिंग प्वाइंट के लिए जमीन तलाशी जा रही है। सिटी बसों के बेड़े में शामिल करने के लिए इलेक्ट्रिक बसों की मांग की गई थी। इसके डिपो के लिए एक जमीन कोनी में उपलब्ध है। दूसरी जमीन शहर में तलाश की जा रही है ताकि बसों के संचालन और चार्जिंग की समुचित व्यवस्था की जा सके। **लव कुमार सिंह, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, गोरखपुर सिटी ट्रांसपोर्ट**

भरभराकर गिरा घर का छज्जा एक ही परिवार के 5 लोग दबे



संवाद सहयोगी, इटावा। चकरनगर तहसील क्षेत्र के एक गांव में गुरुवार सुबह छत का छज्जा गिरने से एक ही परिवार के पांच लोग गिरने के बाद मलबे में दबकर गंभीर रूप से घायल हो गए।

चीख-पुकार पर मोहल्ले में भगदड़ मच गई। घायलों को

प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया। तहसील चकरनगर के गांव बदनपुरा में लगभग साढ़े छह बजे संतोष कुमार शौच के लिए छज्जे पर बने शौचालय में गए थे और घर परिवार की महिलाएं छज्जे पर खड़ी थीं।

इसी दौरान अचानक छज्जा भरभरा कर नीचे गिर गया। जिसमें संतोष कुमार पुत्र खूबचंद, नीरज पत्नी संतोष, आराध्या पुत्री संतोष, मुनीशा पत्नी विनोद व विनोद पुत्र जय चरन छत से गिरने के बाद मलबे में दबकर गंभीर रूप से घायल हो गए।

बिजली कड़कने से छज्जे में दरां हो गई थी

चीख पुकार सुनकर मोहल्ले में भगदड़ मच गई। मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने घायलों को मलबे से निकाल कर निजी वाहन से प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया। घायलों में किसी का सिर फूट गया, तो किसी का पैर और किसी की कमर में गंभीर चोट लग गई और बच्ची के दो दांत टूट गए।

नेपाल व थाईलैंड से आ रही नशे की खेप कारिडोर बना गोरखपुर शहर

संवाददाता, गोरखपुर। शहर अब केवल नेपाल सीमा का प्रवेश द्वार भर नहीं रह गया है। पिछले कुछ महीनों में हुई लगातार बरामदगियों ने संकेत दिया है कि शहर मादक पदार्थ तस्करो के लिए एक बड़े ट्रंजिट और वितरण हब के रूप में उभर रहा है। नेपाल से आने वाली चरस, पूर्वोत्तर और बिहार के रास्ते पहुंचने वाला गांजा, थाईलैंड से कोलकाता होते हुए पहुंच रहा हाइड्रोपोनिक गांजा बता रहा है कि तस्करो ने शहर को अपने नेटवर्क का महत्वपूर्ण केंद्र बना लिया है। चार जून 2026 को आरपीएफ और जीआरपी की संयुक्त कार्रवाई में बस्ती रेलवे स्टेशन पर सत्याग्रह एक्सप्रेस (15273) के जनरल कोच से 5.5 किलोग्राम चरस बरामद की गई। यह चरस लावारिस बैग में छिपाकर ले जाई जा रही थी। इससे पहले एक मार्च 2026 को गोरखपुर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर-दो पर स्थित एक स्टाल से तीन किलो गांजा और 46 किलो डोडा चूरा बरामद हुआ था। जांच में एक वेंडर की भूमिका सामने आई थी, जिसके तार अंतरराज्यीय तस्करी गिरोह से जुड़े होने की आशंका जताई गई। 29 मई 2026 को एसटीएफ ने बेलीपार क्षेत्र में कार्रवाई कर चार किलो चरस के साथ कानपुर के एक तस्कर को गिरफ्तार किया था। पृष्ठताछ में पता चला कि वह नेपाल और बिहार के रास्ते उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में चरस की सप्लाई करता था। बरामद चरस की अंतरराष्ट्रीय कीमत करीब 20 लाख रुपये आंकी गई थी। इसके कुछ दिन बाद 31 मई 2026 को कैंट पुलिस और एएनटीएफ की कार्रवाई में थाईलैंड में तैयार होने वाला हाइड्रोपोनिक गांजा (ओजी-ओशियन ग्रीन) बरामद हुआ।

देवबंद से संदिग्ध आतंकी गिरफ्तार मोहाली ब्लास्ट और जैश-ए-मोहम्मद से कनेक्शन, पंजाब पुलिस साथ ले गई

संवाददाता, सहारनपुर। यूपी एटीएस और पंजाब पुलिस की टीम गुरुवार रात करीब एक बजे देवबंद के बचीटी गांव के प्रधान मोमिन त्यागी के छोटे भाई मोहताशिम को हिरासत में लेकर अपने साथ ले गई। मामले के तार वर्ष 2021 में मोहाली में हुए ब्लास्ट से जुड़े बताए जा रहे हैं। मोहताशिम के कनेक्शन आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद से होने की बात भी सामने आ रही है। सूत्रों की मानें तो पंजाब में कुछ दिन पहले किसी व्यक्ति से भारी मात्रा में आरडीएक्स बरामद किया गया था। उक्त व्यक्ति से पृष्ठताछ के बाद पूरे मामले के तार मोहाली ब्लास्ट से जुड़ गए। इसी की जांच के दौरान यूपी एटीएस और पंजाब एसटीएफ की संयुक्त टीम बचीटी गांव पहुंची और मोहताशिम को हिरासत में लिया। बताया गया है कि मोहताशिम के फोन नंबर के माध्यम से जैश-ए-मोहम्मद का प्रचार प्रसार किया जा रहा था। वॉट्सएप अकाउंट से जुड़े ओटीपी भी पाकिस्तान में बैठे संदिग्ध हैंडलरों को उपलब्ध कराए गए थे। टीम ने जांच के लिए मोहताशिम के पास से कुछ इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी अपने कब्जे में लिए हैं अधिकारी अभी इस मामले में कुछ भी नहीं बता रहे हैं। सुरक्षा एजेंसियां मामले में जानकारी नहीं दे रही हैं। वहीं बचीटी गांव से प्रधान मोमिन तने बताया कि देर रात एटीएस और पंजाब पुलिस की टीम ने उन्हें फोन किया और भाई को अपने साथ ले जाने को कहा। बाद में टीम भाई को अपने साथ ले गई। टीम ने केवल उन्हें इतना बताया कि पंजाब में किसी मामले को लेकर भाई से पृष्ठताछ करनी है।

आंबेडकर यूनिवर्सिटी में बनेगी एयर लैब

आगरा, मथुरा और इटावा के प्रदूषक तत्वों पर होगा अध्ययन, नालेज सेंटर भी बनेगा

संवाददाता, आगरा। डा. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय को आगरा, मथुरा और इटावा के वातावरण में प्रदूषक तत्वों के कारकों पर अध्ययन करने के लिए रीजनल नॉलेज सेंटर बनाया गया है। इन तीनों जिलों से नमूने एकत्रित करने और अध्ययन करने के लिए विश्वविद्यालय में एयर लैब भी स्थापित की जाएगी। लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम में बुधवार को डा. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय और उत्तर प्रदेश क्लीन एयर मैनेजमेंट प्रोजेक्ट अथॉरिटी (यूपीसीएएमपी) एमओयू किया गया। उत्तर प्रदेश क्लीन एयर मैनेजमेंट प्रोजेक्ट अथॉरिटी द्वारा प्रदेश भर में 17 रीजनल



नॉलेज सेंटर स्थापित किए जा रहे हैं। इसमें से एक सेंटर आगरा में स्थापित होने जा रहा है। विश्वविद्यालय के नोडल अधिकारी और पर्यावरण अध्ययन विभाग के प्रो. भूपेंद्र स्वरूप शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय को आगरा, मथुरा और इटावा क्षेत्र के प्रदूषण पर नजर रखने के

लिए रीजनल नालेज सेंटर बनाया गया है। इसके तहत विश्वविद्यालय में मिनी सुपर साइट लैब स्थापित की जाएगी। इसमें वास्तविक समय में प्रदूषण के स्रोतों का पता लगाने में मदद करेगी, जिससे पीएम2.5, धातुओं और अन्य हानिकारक कणों की सटीक जांच हो सकेगी। विश्वविद्यालय की टीम इन तीनों जिलों से प्रदूषक तत्वों के नमूने लेगी, इन नमूनों को एकत्रित करने में लैब की मदद ली जाएगी। नमूनों में प्रदूषक तत्व के कारकों का पता लगाने के लिए एमएमयू, अलीगढ़ भेजा जाएगा। जिससे यह पता चल सकेगा कि प्रदूषक तत्व किस कारण से बढ़ रहे हैं।

यह प्रदेश में सिर्फ चार स्थानों पर होगी। प्रोजेक्ट की फंडिंग विश्व बैंक द्वारा की जाएगी। कुलपति प्रो. आशु रानी का कहना है कि विश्वविद्यालय लंबे समय से प्रदूषण के क्षेत्र में शोध कार्य कर रहा है। रीजनल नॉलेज सेंटर के तहत विश्वविद्यालय परिसर में एयर लैब स्थापित की जाएगी, जो वायु प्रदूषण के नमूनों का सघन विश्लेषण करेगी। नॉलेज सेंटर के तहत पाठ्यक्रम भी संचालित लिए जाएंगे। यह पाठ्यक्रम आईआईटी के द्वारा डिजाइन किए जाएंगे। एमओयू के दौरान यूपीसीएएमपी बी चंद्रकला, प्रो. भूपेंद्र स्वरूप शर्मा, प्रो.मोहम्मद अरशद मौजूद रहे।

गोरखपुर में मछली बनाने को लेकर पति-पत्नी में विवाद, महिला की मौत

संवाददाता, गोरखपुर। मछली बनाने को लेकर गुरुवार की रात पति-पत्नी में विवाद हो गया। इसके बाद देर रात संदिग्ध परिस्थिति में महिला की मौत हो गई। जबकि स्वजन जहरीला पदार्थ खाने से मौत की आशंका जता रहा है। शुक्रवार की सुबह मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। यह मामला गोला थाना के चिलवां गांव का है। पुलिस अभी किसी भी निष्कर्ष पर न पहुंचते हुए पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार कर रही है। घटना की सूचना पुलिस ने महिला के मायके वालों को भी दे दिया है। चिलवा गांव निवासी 40 वर्षीय रेनू देवी पत्नी पप्पू, का अपने पति के साथ अक्सर घरेलू बातों को लेकर विवाद होता रहता था। घटना वाले दिन भी दोनों के बीच मछली बनाने को लेकर कहासुनी हुई। इसके कुछ समय बाद रेनू की तबीयत अचानक बिगड़ने

**मछली बनाने को लेकर पति-पत्नी में विवाद हुआ।
विवाद के बाद महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत।
जहरीला पदार्थ खाने से मौत की आशंका, जांच जारी।**

लगी। उनकी हालत गंभीर होते देख स्वजन में अफरा-तफरी मच गई। स्वजन तत्काल उन्हें इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोला लेकर पहुंचे। वहां चिकित्सकों ने प्राथमिक जांच के बाद हालत गंभीर देखते हुए उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया। लेकिन स्वजन घायल महिला को बड़हलगंज स्थित निजी अस्पताल ले जा रहे थे, लेकिन रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। महिला की मौत की सूचना मिलते ही घर में कोहराम मच गया। बच्चों का रो-रोकर बुरा हाल है। रेनू देवी को एक 18 वर्षीय पुत्री प्रीति और 15 वर्षीय पुत्र अमन हैं। घटना के बाद पूरे

गांव में शोक का माहौल है। सूचना मिलने पर गोला थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जानकारी जुटाई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरने के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक गोला सीपी पांडेय ने बताया कि महिला की मौत के मामले में शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद मौत के वास्तविक कारणों का पता चल सकेगा और आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी। अभी तक की जांच और पृष्ठताछ में जहरीला पदार्थ खाने के बाद तबीयत बिगड़ने की बात बताई जा रही है।

गोरखपुर विश्वविद्यालय में प्रवेश का सुनहरा अवसर

आवेदन की अंतिम तिथि अब 10 जून तक बढ़ी। 30 हजार से अधिक अभ्यर्थी कर चुके हैं आवेदन। तीन नए पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन शुक्रवार से।

संवाददाता, गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए प्रवेश लेने के इच्छुक अभ्यर्थियों के अच्छी खबर है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने स्नातक, परास्नातक व अन्य कक्षाओं में आनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 10 जून तक बढ़ा दी है। आवेदन की अंतिम तिथि पहले चार जून निर्धारित थी। प्रवेश प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने बताया कि छात्रहित में दूसरी बार तिथि विस्तारित की गई है। विस्तारित अवधि में अभ्यर्थी प्रवेश पोर्टल कनकनहनकउपेपवद.पद पर आवेदन कर सकेंगे। विश्वविद्यालय प्रशासन से मिली जानकारी के अनुसार, बृहस्पतिवार की शाम तक करीब 30 हजार अभ्यर्थियों ने आवेदन प्रक्रिया पूरी कर ली है। आगे की योजना यह है कि जून के तीसरे सप्ताह की शुरुआत में सभी अभ्यर्थियों के प्रवेश पत्र जारी कर दिए जाएं। तीसरे हफ्ते से ही प्रवेश परीक्षा भी शुरू का देने का प्रस्तावित कार्यक्रम है। इस दिशा में तैयारियां की जा रही हैं। 10 जून तक इसे लेकर स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी हो सकते हैं। तीन नए पाठ्यक्रमों के लिए आज से आवेदन

प्रो. हर्ष सिन्हा ने बताया कि सत्र 2026-27 के लिए तीन और नए पाठ्यक्रम शुरू करने की मंजूरी कार्य परिषद से मिली है। इनके लिए आवेदन प्रक्रिया शुक्रवार से शुरू होगी। यह नए कोर्स एमएससी फारेंसिक साइंस, मास्टर आफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस व पुरातत्व एवं संग्रहालय विज्ञान में पीजी डिप्लोमा हैं। छात्रहित में आवेदन की तिथि विस्तारित करने का निर्णय लिया गया है। इससे अधिक से अधिक छात्रों को विश्वविद्यालय में प्रवेश का अवसर मिल सकेगा।

गोरखपुर के भलोटिया दवा मंडी में लगी आग, फायर ब्रिगेड ने पाया काबू

संवाददाता, गोरखपुर। टाउनहाल स्थित थोक दवा बाजार भलोटिया मार्केट में आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। प्रथम तल पर संचालित दवा दुकान से निकल रही आग की लपटें देख आसपास के लोगों ने सूचना पुलिस कंट्रोल रूम में दी। फायर ब्रिगेड की टीम ने तत्परता दिखाते हुए करीब 20 मिनट में आग पर काबू पा लिया गया। घटना में कोई जनहानि नहीं हुई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, सुबह करीब 8:22 बजे भलोटिया मार्केट में प्रथम तल पर स्थित वेदिका ट्रेडर्स में आग लगी थी। धुआं और लपटें निकलती देख आसपास के लोगों ने सूचना डायल 112 पर दी। जिस स्थान पर आग



लगी, उसके आसपास दवाओं की कई दुकानें सटी हुई हैं। सूचना मिलते ही 10 मिनट के भीतर फायर स्टेशन

गोलघर से दो फायर टैंडर मौके पर पहुंच गए। अग्निशमन कर्मियों ने मोटर फायर इंजन के जरिए पंपिंग शुरू कर आग बुझाने का अभियान चलाया। करीब 20 मिनट की मशक्कत के बाद आग पर पूरी तरह काबू पा लिया गया। मुख्य अग्निशमन अधिकारी (सीएफओ) संतोष कुमार राय और अग्निशमन अधिकारी (एफएसओ) शांतनु कुमार यादव भी मौके पर मौजूद रहे। दुकान संचालक अनुज अग्रवाल को भी घटना की सूचना देकर मौके पर बुलाया गया। अधिकारियों के अनुसार आग से हुए नुकसान का आकलन किया जा रहा है। इस अग्निकांड में कोई जनहानि नहीं हुई।

काकरोच जनता पार्टी का जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन



धर्मेन्द्र प्रधान के
इस्तीफे की मांग

अभिजीत दीपके

काकरोच जनता पार्टी के संस्थापक

काकरोच
अभिजीत ने
संभाली कमान,
संविधान के साथ
मैदान में उतरे!

दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली में 'काकरोच जनता पार्टी' (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दीपके के नेतृत्व में जंतर-मंतर पर प्रस्तावित प्रदर्शन को लेकर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। राजधानी दिल्ली में प्रस्तावित प्रदर्शन को लेकर सुरक्षा एजेंसियां सतर्क हो गई हैं। ऑनलाइन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'काकरोच जनता पार्टी' (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दीपके के नेतृत्व में जंतर-मंतर पर विरोध अभिजीत दीपके जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन के लिए पहुंच चुके हैं। इस बीच जड़ की राज्यसभा सांसद सागरिका घोष ने श्रृंखला आंदोलन अपना समर्थन दिया। उन्होंने एक्स पर लिखा, शशुभकामनाएं और पूरा समर्थन। सही लड़ाई लड़ते रहो! काकरोच जनता पार्टी के विरोध प्रदर्शन में धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे की मांग की जा रही है। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि शिक्षा मंत्री को हमने चुन कर भेजा है, हमारे टैक्स से उनको तनखाह मिलती है! बवबातवंबी आ रहे हैं, धर्मेन्द्र प्रधान जा रहे हैं!



CJP का प्रदर्शन, फाउंडर
अभिजीत दीपके भी मौजूद



सीएम योगी बोले- 2017 के पहले रामभक्त अयोध्या नहीं जा पाते थे

गोंडा, संवाददाता। मुख्यमंत्री ने गोंडा जिले में 516 करोड़ रुपये की 262 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इन परियोजनाओं से कर्नैलगंज और कटरा बाजार क्षेत्रों को लाभ मिलेगा। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए और तकनीकी निगरानी भी रखी गई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कर्नैलगंज के चक्रौत में आयोजित कार्यक्रम में 516 करोड़ रुपये की 262 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। इस दौरान उन्होंने गोंडा के ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि यह अत्यंत ऊर्जावान जनपद है, लेकिन आजादी के बाद जिस विकास का अधिकारी था, वह उसे नहीं मिला। तुष्टिकरण,

जातिवाद, भाई-भतीजावाद और अराजकता के कारण जनपद पिछड़ता चला गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि एक समय ऐसा था जब प्रदेश और जिले के युवाओं के सामने पहचान का संकट खड़ा हो गया था। दूसरे प्रदेशों में लोग दूरी बनाकर चलते थे, लेकिन आज स्थिति बदल चुकी है। अब उत्तर प्रदेश और गोंडा का नाम सुनते ही लोग सम्मान के साथ गले लगाते हैं।

अब यूपी का नाम सुनकर लोग दूरी नहीं, गले लगाते हैं
मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2017 से पहले प्रदेश में दंगे,



उपद्रव और असुरक्षा का माहौल था। त्योहारों में व्यवधान डाले जाते थे, व्यापारी और बेटियां सुरक्षित नहीं थीं तथा सत्ता में बैठे लोग दंगाइयों को संरक्षण देते थे। अब स्थिति बदल चुकी है। जो भी त्योहारों में खलल डालने की कोशिश करेगा, उसका वर्तमान और भविष्य दोनों समाप्त हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि अयोध्या में 500 वर्षों के इंतजार के बाद राम मंदिर निर्माण डबल इंजन सरकार की बड़ी उपलब्धि है। पहले रामभक्तों पर लाठियां और गोलियां चलती थीं, अब अयोध्या विश्वस्तरीय धार्मिक और सांस्कृतिक नगरी के रूप में विकसित हो रही है।

एक पौधा एक जिम्मेदारी

पर्यावरण दिवस पर रोपे गए 7.5
लाख पौधे, संरक्षण का लिया
संकल्प- हरियाली का रिकार्ड



डीडीयू की वीसी ने परिसर में किया
पौधरोपण, एम्स की कार्यकारी निदेशक
ने एम्स परिसर में किया पौधरोपण

गोरखपुर, संवाददाता। पर्यावरण दिवस और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जन्मदिन पर गोरखपुर जिले में हरियाली की नई इबारत लिखी गई। प्रकृति प्रेमियों, सामाजिक संस्थाओं और सरकारी विभागों ने मिलकर एक दिन में 7.59 लाख पौधे रोपे। 'एक पौधा, एक जिम्मेदारी' के संकल्प के साथ लोगों ने संरक्षण की भी शपथ ली। वन विभाग की ओर से ये आंकड़े जारी किए गए हैं। ग्राम्य विकास विभाग ने 4.29 लाख पौधे रोपे हैं, यह अन्य सभी विभागों की तुलना में सबसे ज्यादा है। इस मौके पर सभा-संगोष्ठियों का भी आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय स्तर पर 3 फीसद गिरावट के बीच यूपी का शानदार प्रदर्शन

लखनऊ, संवाददाता। राष्ट्रीय स्तर पर जीएसटी संग्रह में गिरावट के बावजूद उत्तर प्रदेश ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 13 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की और बड़े राज्यों में शीर्ष स्थान हासिल किया। शुद्ध जीएसटी संग्रह में भी प्रदेश दूसरे स्थान पर रहा। करदाताओं की बढ़ती संख्या और बेहतर कर प्रबंधन को इसका प्रमुख कारण माना गया। देश भर में मई के दौरान जीएसटी संग्रह में सुस्ती रही और राष्ट्रीय स्तर पर इसमें तीन फीसदी की गिरावट दर्ज हुई। वहीं, उत्तर प्रदेश ने इस चुनौतीपूर्ण माहौल में खुद को सबसे तेज बढ़ने वाला बड़ा राज्य साबित किया और जीएसटी ग्रोथ में पूरे देश में नंबर वन पर रहा।

मई में यूपी का संग्रह

जीएसटी संग्रह (एसजीएसटीसीजीएसटी आईजीएसटी) बढ़कर 8,728 करोड़ रुपये हो गया, जो पिछले साल मई के मुकाबले 13 फीसदी अधिक है। इसी अवधि में तमिलनाडु में 15 प्रतिशत, राजस्थान में 11 प्रतिशत, बिहार में 7 प्रतिशत और उत्तराखंड में 19 प्रतिशत गिरावट दर्ज की गई। जबकि महाराष्ट्र में वृद्धि शून्य रही तो गुजरात व कर्नाटक में सिर्फ एक प्रतिशत की वृद्धि हुई। यानी जब अधिकांश बड़े राज्यों की ग्रोथ धीमी या नकारात्मक रही तो यूपी ने दो अंकों की वृद्धि दर्ज कर सबसे मजबूत प्रदर्शन किया।

यूपी शुद्ध जीएसटी संग्रह में देश में दूसरे स्थान पर

जीएसटी संग्रह का एक और महत्वपूर्ण पैमाना शुद्ध जीएसटी संग्रह माना जाता है। इसमें से रिफंड घटाकर वास्तविक राजस्व देखा जाता है। इसमें भी यूपी ने बड़ी उपलब्धि हासिल की। एसजीएसटी व आईजीएसटी सेटलमेंट जोड़ने और केंद्र से मिले एसजीएसटी रिफंड को घटाने के बाद यूपी का शुद्ध जीएसटी संग्रह 17,169 करोड़ रुपये रहा, जिससे प्रदेश देश में दूसरे स्थान पर पहुंच गया। इस सूची में महाराष्ट्र 36,825 करोड़ रुपये के साथ शीर्ष पर और कर्नाटक 16,177 करोड़ रुपये के साथ तीसरे नंबर पर रहा। राज्य कर आयुक्त ने बताया कि डॉ. नितीन बंसल ने बताया कि पहले राज्य कर विभाग की कर वृद्धि भारत सरकार की ग्रोथ के मुकाबले कम थी। इस बार जहां ऑल इंडिया ट्रेड -3 फीसदी रहा, वहीं यूपी ने दोहरे अंकों की ग्रोथ हासिल की है। उपभोक्ता ही राज्य की बड़ी ताकत बनकर उभरे हैं।

महाशक्ति बनने की ओर भारत-2060 तक ग्लोबल जीडीपी में चीन को पछाड़ देगा देश

बिजनेस डेस्क। क्या भारत आर्थिक महाशक्ति बनने वाली है? वर्ल्ड इनइक्वैलिटी लैब की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक 2060 तक ग्लोबल जीडीपी में भारत की हिस्सेदारी चीन से अधिक हो जाएगी। अर्थव्यवस्था का पूरा गणित यहां समझें। वैश्विक अर्थव्यवस्था के पटल पर आने वाले दशक बड़े ऐतिहासिक बदलावों के गवाह बनने वाले हैं। भारत अपनी तेज आर्थिक और जनसांख्यिकीय रफ्तार के दम पर साल 2060 तक क्रय शक्ति समता (पीपीपी) के आधार पर वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में हिस्सेदारी के मामले में चीन को पीछे छोड़ने के लिए तैयार है। पेरिस स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (पीएसई) से जुड़ी शोध संस्था वर्ल्ड इनइक्वैलिटी लैब (डब्ल्यूआईलैब) की एक ताजा रिपोर्ट में यह अहम अनुमान लगाया गया है। यह रिपोर्ट इस बात की ओर इशारा करती है कि 21वीं सदी के उत्तरार्ध में बीजिंग के आर्थिक दबदबे में तेज गिरावट आएगी और दुनिया एक बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर बढ़ेगी।

चीन की जनसांख्यिकीय चुनौती और भारत का उदय
ग्लोबल जस्टिस रिपोर्ट: ए प्लान फॉर इक्वैलिटी एंड प्रोस्पेरिटी विद प्लेनेटरी

चीन को पछाड़ने के लिए 2060 का इंतजार



बाउंड्रीज नामक इस रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान में पीपीपी के लिहाज से वैश्विक जीडीपी में चीन की हिस्सेदारी लगभग 20 प्रतिशत है, जो अमेरिका से करीब एक-तिहाई अधिक है। रिपोर्ट का अनुमान है कि साल 2035 तक चीन का यह आंकड़ा अमेरिका के मुकाबले दोगुना हो जाएगा। हालांकि, चीन की सबसे बड़ी और दीर्घकालिक चुनौती उसकी तेजी से घटती आबादी है। रिपोर्ट के आंकड़े बताते हैं कि 1945 में दुनिया की कुल आबादी में चीन की हिस्सेदारी 23 प्रतिशत थी, जो 2025 में घटकर लगभग 17

प्रतिशत रह गई है और 2100 तक इसके 8 प्रतिशत से भी कम होने की आशंका है। इसी बड़े जनसांख्यिकीय पतन के कारण 21वीं सदी के दूसरे भाग में वैश्विक जीडीपी में चीन की हिस्सेदारी पहले स्थिर होगी और फिर उसमें गिरावट आने लगेगी। ठीक इसी दौरान, यानी 2060 के आसपास, भारत अपनी जनसांख्यिकीय मजबूती के साथ वैश्विक जीडीपी हिस्सेदारी में चीन से आगे निकल जाएगा।

नहीं लौटेगा अमेरिका या यूरोप जैसा एकाधिकार

रिपोर्ट में यह साफ किया गया है कि चीन के तेजी से हुए आर्थिक विस्तार के बावजूद दुनिया पर किसी एक देश का पूरा एकाधिकार अब संभव नहीं है। इस बात की संभावना बेहद कम है कि चीन कभी भी उस तरह की पूर्ण आर्थिक शक्ति या हेजेमनी प्राप्त कर सकेगा, जैसी 1950 के आसपास अमेरिका के पास थी, जब वैश्विक जीडीपी में उसकी 35 से 40 प्रतिशत हिस्सेदारी थी। इसी तरह, 1900 से 1910 के बीच यूरोप का भी करीब 40 से 45 प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ दबदबा था। इसके विपरीत, 19वीं और 20वीं सदी के उलट 21वीं सदी की दुनिया पूरी तरह से बहुध्रुवीय होने जा रही है।

उत्पादकता और असमानता के मोर्चे पर भारत के लिए सबक
भविष्य के इस सुनहरे अनुमान के बीच भारत के नीति-निर्माताओं के लिए कुछ चिंताएं भी हैं। रिपोर्ट स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है कि भारत में चीन की तुलना में कहीं अधिक आर्थिक असमानता है। इसके साथ ही भारत की उत्पादकता वृद्धि दर भी चीन से काफी कम है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार, चीन की इस बेहतर उत्पादकता के पीछे मानव पूंजी

पर उसका अधिक और बेहतर तरीके से लक्षित खर्च मुख्य कारण रहा है, जो भारत के लिए एक बड़ा नीतिगत सबक है। बता दें कि पीपीपी का अर्थ यह मापना है कि किसी देश की मुद्रा की एक इकाई से दूसरे देश में कितनी वस्तुएं और सेवाएं खरीदी जा सकती हैं, और इसी मानक पर ये सभी लंबी अवधि के आर्थिक अनुमान लगाए गए हैं।

मौजूदा परिदृश्य में कहां खड़ी है दुनिया?
भविष्य की इन संभावनाओं के बीच 2026 की वर्तमान स्थिति को समझना भी आवश्यक है। नवीनतम वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक (डब्ल्यूईओ) के अनुसार, साल 2026 में भारत की कुल जीडीपी 4.15 ट्रिलियन डॉलर के स्तर पर होगी। इसकी तुलना में यूके की जीडीपी 4.27 ट्रिलियन डॉलर और जापान की 4.38 ट्रिलियन डॉलर रहने का अनुमान है। वहीं, 32.38 ट्रिलियन डॉलर के विशाल आकार के साथ अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना रहेगा, जबकि चीन 20.85 ट्रिलियन डॉलर के साथ दूसरे स्थान पर काबिज रहेगा। भारत का लक्ष्य इसी अंतर को पाटते हुए अगले कुछ दशकों में शीर्ष पर अपनी जगह बनाना है।



मुकेश अंबानी को पीछे छोड़ा, यिमिंग बने एशिया के दूसरे सबसे अमीर शख्स



TMC को एक और झटका

ममता बनर्जी के करीबी फिरहाद हकीम ने मेयर पद से दिया इस्तीफा



2026 में गोतम अडानी ने हर रोज़ कमाए औसत 1897 करोड़ रुपए

“सालों तक, भारत ने अमेरिका का बहुत फ़ायदा उठाया. उन्होंने हम पर बहुत ज़्यादा टैरिफ़ लगाए और हमें कुछ नहीं दिया, हार्ले डेविडसन पर 200% टैरिफ़ लगाया. लेकिन ये मुझसे पहले की बात थी. अब इसका उल्टा होगा. अब हम भारत से बहुत पैसा कमाएंगे.”

डोनाल्ड ट्रंप अमेरिकी राष्ट्रपति



अन्नामलाई और बीजेपी में 18 माह से थे मतभेद

चेन्नई, ए.जे.सी। पूर्व तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष के. अन्नामलाई ने भाजपा छोड़कर नई राजनीतिक पार्टी बनाने का एलान किया है। उन्होंने कहा कि वह नई और समावेशी राजनीति शुरू करना चाहते हैं। अन्नामलाई के पिछले 18 महीनों से पार्टी नेतृत्व से मतभेद थे। भाजपा ने उनके जाने को बड़ा नुकसान मानने से इनकार किया है। आइए, इस्तीफे की इनसाइड स्टोरी को समझते हैं... तमिलनाडु भाजपा में लंबे समय से चल रही अंदरूनी खींचतान आखिरकार खुलकर सामने आ गई। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के. अन्नामलाई ने भाजपा की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा देकर नई राजनीतिक पार्टी बनाने का एलान कर दिया। हालांकि उनके इस्तीफे के पीछे सिर्फ एक दिन या एक फैसला जिम्मेदार नहीं था। पार्टी सूत्रों और अन्नामलाई के बयानों से साफ है कि पिछले करीब 18 महीनों से भाजपा नेतृत्व और अन्नामलाई के बीच मतभेद लगातार बढ़ रहे थे। राजनीतिक जानकार मानते हैं कि एआईएडीएमके के साथ भाजपा का दोबारा गठबंधन इस पूरे विवाद में ताबूत की आखिरी कील साबित हुआ।

अन्नामलाई और भाजपा नेतृत्व के बीच मतभेद क्यों बढ़े?
अन्नामलाई ने खुद स्वीकार किया कि वह पिछले डेढ़ साल से पार्टी नेतृत्व के साथ मतभेदों पर चर्चा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उन्होंने दिसंबर 2025 में ही भाजपा नेतृत्व को पार्टी छोड़ने की इच्छा बता दी थी। हालांकि पार्टी ने उनसे विधानसभा चुनाव की तैयारियां पूरी करने को कहा था। अन्नामलाई का मानना था कि तमिलनाडु में भाजपा को स्वतंत्र ताकत के रूप में आगे बढ़ना चाहिए। लेकिन पार्टी नेतृत्व की रणनीति अलग दिखाई दी। यही कारण था कि समय के साथ उनके और केंद्रीय नेतृत्व के बीच दूरी बढ़ती चली गई।

एआईएडीएमके से गठबंधन कैसे बना आखिरी वजह?
राजनीतिक हलकों में माना जा रहा है कि एआईएडीएमके और भाजपा के बीच दोबारा गठबंधन बनने के बाद अन्नामलाई की नाराजगी और गहरी हो गई थी। अन्नामलाई अपने कार्यकाल के दौरान डीएमके के साथ-साथ एआईएडीएमके पर भी खुलकर हमला बोलते रहे थे। जयललिता को लेकर उनकी टिप्पणी से



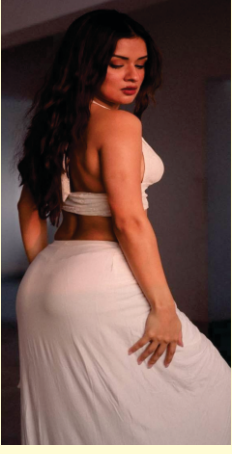
दोनों दलों के रिश्तों में तनाव आ गया था। बाद में सितंबर 2023 में एआईएडीएमके ने भाजपा से गठबंधन तोड़ दिया था। लेकिन 2026 विधानसभा चुनाव से पहले जब दोनों दल फिर साथ आए, तो इसे अन्नामलाई की राजनीतिक लाइन के खिलाफ माना गया। इसके बाद अप्रैल 2025 में नैनार नागेंद्रन को तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष बनाया गया और अन्नामलाई संगठन के शीर्ष पद से बाहर हो गए।

क्या अन्नामलाई नई राजनीति की तैयारी में हैं?
इस्तीफे के बाद अन्नामलाई ने साफ कहा कि अब वह नई और समावेशी राजनीति शुरू करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि नई पार्टी आम लोगों की राजनीति करेगी और नए नेताओं को तैयार करेगी। अन्नामलाई ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति सम्मान जताया, लेकिन साथ ही यह भी साफ किया कि उनका राजनीतिक रास्ता अब अलग होगा। उनके समर्थकों ने इस्तीफे के बाद पटाखे फोड़े और मिठाइयां बांटीं। इससे साफ संकेत मिला कि अन्नामलाई अपनी अलग राजनीतिक जमीन तैयार करने में जुट चुके हैं।

भाजपा और दूसरे दलों की प्रतिक्रिया क्या रही?
तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष नैनार नागेंद्रन ने कहा कि अन्नामलाई के जाने से भाजपा को कोई नुकसान नहीं होगा। उन्होंने कहा कि भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है और उसकी राजनीति किसी एक व्यक्ति पर निर्भर नहीं करती। वहीं डीएमके नेताओं ने दावा किया कि अन्नामलाई भविष्य में भी भाजपा की विचारधारा के करीब रहेंगे। दूसरी ओर एमडीएमके नेता दुरई वाइको ने अन्नामलाई के फैसले का स्वागत किया। अब तमिलनाडु की राजनीति में सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या अन्नामलाई अपनी नई पार्टी के जरिए भाजपा और द्रविड़ दलों दोनों को चुनौती दे पाएंगे।



विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आज कुलकुला देवी मंदिर परिसर में “एक पेड़ माँ के नाम” थीम पर आधारित वृक्षारोपण अभियान का भव्य शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर मा0 सांसद कुशीनगर एवं अन्य जनपद के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की।



अवनीत कौर ने बिकिनी में दिए
सिजलिंग पोज, मियामी बीच
की तस्वीरों की शेयर



350

करोड़ की

पेद्दी

जाहवी का अपमान



एंटरटेनमेंट डेस्क

जब से राम चरण और जाहवी कपूर की फिल्म पेदी सिनेमाघरों में रिलीज हुई है, फैंस इस बात से नाराज हैं कि फिल्म में एक्ट्रेस को किस तरह दिखाया गया है। फिल्म में अचियम्मा का रोल निभाने वाली जाहवी को अक्सर उनके चेस्ट और कमर के शॉट्स के जरिए एक ऑब्जेक्ट की तरह दिखाया गया है। एक सीन में तो पेदी उनके साथ असॉल्ट भी करता है। ऐसा लगता है कि सिर्फ फैंस ही इस बात से नाराज नहीं हैं कि उनके साथ कैसा बर्ताव किया गया है।

फिल्म में दिखाया गया है कि कैसे एक आम आदमी अपने बेसिक राइट्स के लिए लड़ता है। लेकिन वहीं दूसरी एक महिला का ऑब्जेक्टिफिकेशन किया जा रहा है। कुछ फैंस ने देखा कि जाहवी ने उस पोस्ट को लाइक किया था। एक व्यक्ति ने तो कमेंट भी किया, जाहवी कपूर ने इसे लाइक किया है। कमेंट्स में कुछ लोगों ने पेदी के मेकर्स की आलोचना की कि उन्होंने जाहवी के साथ कैसा बर्ताव किया है वहीं दूसरों ने सवाल उठाया कि उनकी जगह पर मौजूद कोई एक्ट्रेस ऐसा रोल क्यों करेगी।

भोजपुरी की सबसे महंगी अभिनेत्री कौन अक्षरा सिंह और आम्रपाली दुबे में से किसकी नेटवर्थ है सबसे ज्यादा

एंटरटेनमेंट डेस्क। अक्षरा सिंह और आम्रपाली दुबे भोजपुरी इंडस्ट्री की सबसे चर्चित एक्ट्रेस में से एक हैं। पॉपुलैरिटी और मोटी कमाई की बदौलत इन दोनों ही एक्ट्रेस की लाइफस्टाइल किसी महारानी से कम नहीं है। जानें टॉप भोजपुरी अभिनेत्रियों की नेटवर्थ?

भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री की अभिनेत्रियां आज कमाई और लोकप्रियता के मामले में किसी से पीछे नहीं हैं। हाल ही में अभिनेत्री अक्षरा सिंह, अक्षय कुमार की फिल्म श्वेलकम 3 के गाने श्विस घिस घिस में अपने डांस को लेकर काफी चर्चा में हैं। आइए जानते हैं भोजपुरी की टॉप अभिनेत्रियों की कुल संपत्ति और उनकी फीस के बारे में।

आम्रपाली दुबे

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, भोजपुरी अभिनेत्री आम्रपाली दुबे की कुल संपत्ति लगभग 25 से 30 करोड़ रुपये है। आम्रपाली 15 से 30 लाख रुपये प्रति फिल्म चार्ज करती हैं। इसके अलावा आम्रपाली ब्रैंड एंडोर्समेंट, सोशल मीडिया और स्टेज शो से भी मोटी कमाई करती हैं। आम्रपाली के पास रेंज रोवर, बीएमडब्ल्यू, फॉर्च्यूनर जैसी कारों का कलेक्शन है। आम्रपाली का मुंबई और गोरखपुर में आलीशान घर है।

रानी चटर्जी

भोजपुरी की चर्चित अभिनेत्री रानी चटर्जी की कुल संपत्ति लगभग 35 से 40 करोड़ रुपये है। रानी एक फिल्म के लिए 8 से 15 लाख रुपये की फीस लेती हैं। रानी ने साल 2004 में सुपरहिट फिल्म शससुरा बड़ा पैसावाला से अपने करियर की शुरुआत की थी। रानी को भी लग्जरी गाड़ियों का काफी शौक है।

अंजना सिंह

अंजना सिंह की कुल संपत्ति लगभग 21 करोड़ रुपये के आस पास है। अंजना एक फिल्म के लिए 12 से 20 लाख रुपये चार्ज करती हैं। अंजना ने शलावारिस, वर्दी वाला गुंडा और श्शरनी जैसी कई हिट फिल्मों में काम किया है। अंजना टीवी सीरियल्स से भी अच्छी कमाई करती हैं।

काजल राघवानी

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, काजल राघवानी की कुल संपत्ति लगभग 14 से 16 करोड़ रुपये है। काजल 20 से 25 लाख रुपये प्रति फिल्म चार्ज करती हैं। काजल आइटम सॉन्ग के जरिए भी मोटी कमाई करती हैं। काजल एक आइटम सॉन्ग के लिए 50 से 60 हजार रुपये चार्ज करती हैं। काजल के पास कई महंगी कारों का कलेक्शन है। इसमें ऑडी और बीएमडब्ल्यू जैसी महंगी गाड़ियां शामिल हैं।



जाहवी ने लाइक की सोशल मीडिया पोस्ट?

सोशल मीडिया पर एक वायरल स्क्रीनशॉट में दावा किया गया है कि जाहवी कपूर ने एक इंस्टाग्राम पोस्ट को लाइक किया, जिसमें उनके रोल को किसी एक्ट्रेस का सबसे महंगा अपमान बताया गया है। पोस्ट में मेकर्स की आलोचना करते हुए कहा गया है कि उन्होंने जाहवी की कमर, मिडरिफ और पिछले हिस्से को बहुत ज्यादा शॉट्स दिखाए हैं और वे उनके प्रति जुनूनी रहे हैं। पोस्ट में यह भी लिखा है, किसी एक्ट्रेस को उनके निभाए किरदारों के लिए दोष देना आसान है, लेकिन असल कहानी कुछ और ही है। रिपोर्ट्स से पता चलता है कि जाहवी कपूर ने पोस्ट-प्रोडक्शन के दौरान इन शॉट्स पर साफ तौर पर सवाल उठाए थे। यह कदम इंडस्ट्री की महिलाओं को जरूरत से ज्यादा सेक्सुअलाइज करने की आदत के खिलाफ उनके हालिया सार्वजनिक रुख को पूरी तरह से दिखाता है।

पंत या जुरेल में से किसे मिलेगी प्लेइंग-11 में जगह



क्या किसी नए चेहरे को प्लेइंग-11 में मौका देगा भारत?

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत और अफगानिस्तान के बीच टेस्ट मैच के दौरान नंबर तीन और रवींद्र जडेजा का विकल्प खोजना भारतीय टीम के लिए अहम पहलू होंगे। इसमें यह भी देखना दिलचस्प होगा कि किसी खिलाड़ी को डेब्यू का मौका मिलता है या नहीं? भारतीय टीम लंबे समय बाद टेस्ट मैच खेलने उतरेगी। भारत और अफगानिस्तान के बीच शनिवार से मुल्लापुर में एकमात्र टेस्ट मैच खेला जाएगा। यह मैच विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) का हिस्सा नहीं है, लेकिन आगे टीम की डगर कठिन है इसलिए वह उचित संयोजन तैयार करने के इरादे से उतरेगा। भारत का पिछले कुछ समय में घरेलू टेस्ट मैचों में निराशाजनक प्रदर्शन रहा है, लेकिन उसकी टीम अब भी बेहद मजबूत है। नंबर तीन पर कोच ने स्पष्ट किया **रुख** सबसे ज्यादा चर्चा इस बात को लेकर थी

कि इस मैच में नंबर तीन के स्थान पर साई सुदर्शन और देवदत्त पडविकल में से कौन उतरेगा। मैच से एक दिन पहले ही मुख्य कोच गौतम गंभीर ने स्पष्ट किया है कि तीसरे नंबर पर साई सुदर्शन बल्लेबाजी के लिए आएंगे। यानी यह तय है कि पडविकल अफगानिस्तान के खिलाफ मैच में नहीं खेलेंगे। गंभीर का तर्क है कि सुदर्शन को तीसरे नंबर पर ज्यादा मौके नहीं हैं और चार-पांच मैचों से उनका आकलन नहीं किया जा सकता है। **जडेजा के विकल्प की करनी होगी तलाश** भारतीय खिलाड़ी पिछले साल बेहतरीन तैयारी के साथ मैदान में उतरी दक्षिण अफ्रीका की टीम से 0-2 से मिली करारी हार को नहीं भूलेंगे और वह अनुभव के अंतर के बावजूद विपक्षी टीम को हल्के में न लें तो बेहतर होगा। तीसरे नंबर का बल्लेबाज और लाल गेंद की क्रिकेट में रवींद्र जडेजा के संभावित उत्तराधिकारी दो ऐसे पहलू हैं जिन्हें मुख्य

कोच गौतम गंभीर और कप्तान शुभमन गिल अगरस्ट में श्रीलंका के खिलाफ होने वाली दो मैचों की टेस्ट श्रृंखला से पहले इस मैच में रवींद्र जडेजा को आराम दिया गया है, लेकिन यह एक सच्चाई है कि भारतीय चयनकर्ता और टीम प्रबंधन राजकोट के इस ऑलराउंडर के बिना भी टीम को तैयार करने के लिए अन्य विकल्पों पर विचार कर रहे हैं। इसका एक प्रमुख कारण जडेजा का गेंदबाजी में अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाना रहा है। जडेजा की सबसे बड़ी खूबी विदेशी परिस्थितियों में टेस्ट मैच में उनकी बल्लेबाजी है, जो अभी भी बेहतरीन है और इसलिए उनके पास अभी कुछ समय है। लेकिन भारतीय टीम प्रबंधन ने उनके विकल्प की तलाश शुरू कर दी है और इसलिए उसने मानव सुधार और हर्ष दुबे को टीम में रखा है। **पंत को मिल सकता है मौका** अगर पिछले कुछ दिन के नेट अभ्यास पर गौर करें तो सुधार बेहतर खिलाड़ी नजर आते हैं लेकिन दुबे का पलड़ा भी कम भारी नहीं है। मानव आक्रामक गेंदबाज नजर आते हैं जबकि दुबे का रवैया थोड़ा रक्षात्मक है लेकिन उनकी बल्लेबाजी अधिक मजबूत है। वहीं, उपकप्तानी से हटाए जाने के बावजूद ऋषभ पंत ही विकेटकीपर के तौर पर पहली पंसद होंगे। खुद गंभीर ने कहा है कि पंत को उनका समर्थन प्राप्त है। पंत का आईपीएल के मौजूदा सीजन में प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा था और अब वह इस मैच के जरिये फॉर्म में वापसी करना चाहेंगे।

तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए किसे मिलेगा मौका



हम केवल 11 खिलाड़ियों का चयन कर सकते हैं और साई खराब फॉर्म में नहीं हैं। उन्होंने आईपीएल में 700 से अधिक रन बनाए हैं। अगर हम साई का आकलन चार पांच मैचों के आधार पर करेंगे तो फिर कोई ठोस राय नहीं बना पाएंगे।

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत और अफगानिस्तान के बीच शनिवार से मुल्लापुर में एकमात्र टेस्ट की शुरुआत होगी। भारत लंबे समय बाद टेस्ट खेलने उतरेगा। सबसे ज्यादा चर्चा नंबर तीन सीन को लेकर है। साई सुदर्शन और देवदत्त पडविकल के रूप में भारत के पास इस स्थान के लिए दो विकल्प हैं। अब मुख्य कोच गौतम गंभीर ने बताया है कि इस स्थान पर बल्लेबाजी के लिए किसे मौका मिलेगा। **सुदर्शन की फॉर्म का समर्थन किया** भारत और अफगानिस्तान के बीच यह टेस्ट मैच मौजूदा विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) का हिस्सा नहीं है, लेकिन यह आगामी सीरीज को देखते हुए टीम संयोजन तैयार करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मैच से पहले गंभीर ने कहा, साई सुदर्शन को उचित मौका नहीं मिला है। उन्होंने अधिकतर मैच इंग्लैंड में खेले और मुझे लगता है कि उन्हें उचित मौका मिलना चाहिए। हम केवल 11 खिलाड़ियों का चयन कर सकते हैं और साई खराब फॉर्म में

नहीं हैं। उन्होंने आईपीएल में 700 से अधिक रन बनाए हैं। अगर हम साई का आकलन चार पांच मैचों के आधार पर करेंगे तो फिर कोई ठोस राय नहीं बना पाएंगे। **श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज पर ध्यान** मानव सुधार और हर्ष दुबे के बीच बाएं हाथ के स्पिनर के एक स्थान के लिए प्रतिस्पर्धा हैं और गंभीर ने कहा कि भारत को श्रीलंका में अगरस्ट में होने वाली दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए स्पिन गेंदबाजी के कई विकल्प तैयार करने होंगे। उन्होंने कहा, मानव और हर्ष कुछ हद तक एक जैसे खिलाड़ी हैं, लेकिन उनके गेंद फेंकने के तरीके में कुछ अंतर भी हैं। इस मैच से हमें अपना चौथा स्पिनर तैयार करने में मदद मिलेगी क्योंकि हम श्रीलंका में चार स्पिनर लेकर जाएंगे। न्यूजीलैंड का दौरा करने पर हमें अलग तरह से तैयारी करनी होगी। हमारा मानना है कि हमें टेस्ट मैचों के लिए बेहतर तैयारी करने की जरूरत है।

ललित मोदी का दावा-सीनियर खिलाड़ियों से की थी 2007 टी20 विश्वकप खेलने की अपील

मैंने हर खिलाड़ी से टी20 खेलने के लिए कहा था, लेकिन इन्होंने मुझसे कहा कि ये बेवकूफी भरा खेल है। हम इसमें नहीं खेलना चाहते।

ललित मोदी, आईपीएल के पूर्व चेयरमैन



स्पोर्ट्स डेस्क। आईपीएल के पूर्व चेयरमैन ललित मोदी इन दिनों काफी चर्चा में हैं। ललित मोदी ने अब एक बड़ा खुलासा करते हुए बताया है कि 2007 में उन्होंने इंग्लैंड दौरे के दौरान सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़ और सौरव गांगुली जैसे सीनियर खिलाड़ियों से टी20 क्रिकेट खेलने की विनती की थी। आईपीएल के पूर्व चेयरमैन ललित मोदी ने बड़ा दावा करते हुए कहा है कि 2007 में उन्होंने सचिन तेंदुलकर, सौरव गांगुली और राहुल द्रविड़ जैसे सीनियर खिलाड़ियों से टी20 क्रिकेट खेलने की अपील की थी। ललित मोदी ने बताया कि किस तरह वह 2007 में भारत के इंग्लैंड दौरे के दौरान ड्रेसिंग रूम में भारतीय खिलाड़ियों के पास गए थे और उन्होंने इन खिलाड़ियों को पहले टी20 विश्व कप में खेलने के लिए मनाने की कोशिश की थी। न्यूज एजेंसी एएनआई के साथ बातचीत में ललित मोदी ने खुलासा करते हुए बताया कि उन्होंने 2007 में इंग्लैंड दौरे के दौरान भारतीय खिलाड़ियों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया और उन्हें पहले आईसीसी टी20 विश्व कप में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। हालांकि, उन्होंने कहा कि कई खिलाड़ी नए प्रारूप में खेलने के लिए अनिच्छुक थे, इसे बेवकूफी भरा खेल बताते हुए उन्होंने लंबे दौरे के बाद थकान और अपने परिवार के साथ समय बिताने की इच्छा का हवाला दिया था। आईपीएल के संस्थापक ने उस रवैये की तुलना वर्तमान समय से करते हुए कहा कि टी20 क्रिकेट का महत्व इतना बढ़ गया है कि अब अगर कोई खिलाड़ी विश्व कप से बाहर रहने का विकल्प चुनता है तो प्रशंसकों, खिलाड़ियों और प्रशासकों की ओर से व्यापक आलोचना होगी।

दी नैक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक
बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन
ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा
हुसैनिया बिल्डिंग बकसीपुर
गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी
गंगा टोला, निकट जानकी
बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर
पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित।
पिन:- 273003

UPHIN/2023/90814

बृजेन्द्र कुमार

मो0. नं0. 7307180148, 9170772370

Email- thenextpost01@gmail.com

नोट:- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होंगे।

भारतीय टीम में बदलाव की तैयारी, कौन होगा उपकप्तान

स्पोर्ट्स डेस्क। अजीत अगरकर की अगुआई वाली चयन समिति की शनिवार को बैठक होनी है। इसमें आयरलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज के साथ ही एशियाई खेलों के लिए भारतीय टीम का चयन होना है। सभी की नजरें इस बात पर हैं कि सूर्यकुमार यादव का क्या होगा। क्या उन्हें बरकरार रखा जाएगा या टीम नए कप्तान के साथ उतरेगी। भारतीय टी20 टीम में बड़े बदलाव की तैयारी चल रही है और अब ये लगभग तय है कि सूर्यकुमार यादव की जगह श्रेयस अय्यर टी20 टीम के कप्तान होंगे। आगामी आयरलैंड और इंग्लैंड दौरे तथा जापान में होने वाले एशिया खेलों की टीम के चयन के लिए शनिवार को अजीत अगरकर की अगुआई वाली राष्ट्रीय चयन समिति की बैठक होगी। भारत को 26 और 28 जून को आयरलैंड के खिलाफ दो टी20 खेलने हैं, जबकि इंग्लैंड के खिलाफ एक जुलाई से होने वाली सीमित ओवरों की सीरीज में पांच टी20 और तीन वनडे मैच खेले जाने हैं। **सूर्यकुमार के लिए टीम में जगह बनाना हुआ मुश्किल** एशियाई खेलों का आयोजन इस साल सितंबर-अक्टूबर में जापान में होना है। इसके लिए

टीम की घोषणा इसलिए जल्दी हो रही है क्योंकि आयोजकों ने डेडलाइन पहले की रखी है। यह माना जा रहा है कि मुंबई इंडियंस के युवा बल्लेबाज तिलक वर्मा टी20 टीम के नए उपकप्तान होंगे, जबकि 15 साल के वैभव सूर्यवंशी को भी सीनियर टीम में पहली बार जगह मिल सकती है। सूर्यकुमार यादव से सिर्फ कप्तानी ही नहीं छिनेगी, बल्कि वह टीम से बाहर किए जा सकते हैं। सूर्यकुमार की कप्तानी में भारत ने इस साल टी20 विश्व कप के खिताब का बचाव किया था, लेकिन पिछले कई महीनों से वह फॉर्म में नहीं हैं। **श्रेयस का पलड़ा भारी क्यों?** दूसरी तरफ, 31 साल के श्रेयस टी20 विश्व कप का हिस्सा नहीं थे, लेकिन अब माना जा रहा है कि वह नंबर चार स्थान पर जगह लेंगे। आईपीएल में कप्तान के तौर पर श्रेयस का प्रदर्शन शानदार रहा है। उन्होंने अपनी कप्तानी में दिल्ली कैपिटल्स, कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) और पंजाब किंग्स को फाइनल तक पहुंचाया है। **2024 में उनकी ही कप्तानी में केकेआर ने खिताब अपने नाम किया था।** तीन अलग-अलग टीमों को आईपीएल फाइनल तक पहुंचाने वाले श्रेयस एकमात्र कप्तान हैं जिससे उनकी

लीडरशीप को लेकर भरोसा बढ़ा है। इतना नहीं, कप्तान की जिम्मेदारी के बावजूद श्रेयस की बल्लेबाजी पर कोई असर नहीं पड़ा और इस साल आईपीएल में उन्होंने दमदार बल्लेबाजी की। **दो अलग टीमों का होगा एलान** मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर ब्रिटेन दौर और एशियाई खेलों के लिए दो अलग-अलग टीम का एलान करेंगे। वेस्टइंडीज के खिलाफ घरेलू सीमित ओवरों की सीरीज होने के बावजूद एशियाई खेलों के लिए भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) अपनी सर्वश्रेष्ठ टीम चुनेगा। एशियाई खेलों में तिलक वर्मा टीम के कप्तान हो सकते हैं और वैभव सूर्यवंशी भी इस टी20 टीम का हिस्सा हो सकते हैं। **नए चेहरों को मौका, क्या भुवनेश्वर की होगी वापसी?** इस दौर के लिए कुछ नए चेहरों को भी मौका मिल सकता है जिसमें तेज गेंदबाज प्रिस यादव और लेफ्ट ऑर्म स्पिनर हर्ष दुबे शामिल हैं जिन्हें अफगानिस्तान के खिलाफ टेस्ट और वनडे टीम में जगह मिली थी। चयनकर्ता मोहम्मद शमी से तो आगे बढ़ चुके हैं, लेकिन यह देखना दिलचस्प होगा कि भुवनेश्वर कुमार की टीम में वापसी हो पाती है या नहीं।